माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त, बेंगलुरू

(बेंगलुरू नगर विश्वविद्यालय)

पंजीयन प्रपत्र

नाम _____

पदनाम _____

विश्वविद्यालय / संस्थान _____

पत्राचार का पूरा पता _____

_____

मोबाईल नं. _____

ई-मेल _____

शोधपत्र का शीर्षक _____

_____

पंजीयन शुल्क : रु.300/-

खाता संख्या : 20150110217078

बैंक का नाम : यूको बैंक

आईएफएससी : UCBA0002015

UPI पेमेंट के लिए बारकोड को स्कैन करें

पंजीयन शुल्क के भुगतान का माध्यम :

NEFT ____/UPI ____

भुगतान की तिथि _____

हस्ताक्षर

ऑनलाईन पंजीकरण हेतु नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें या बार कोड को स्कैन करें।

गूगल फॉर्म /Google form

पंजीयन प्रपत्र को भरकर उसकी स्कैन कॉपी mcc75hindiconference@gmail.com पर भेजें।

सूचना : इस पंजीयन प्रपत्र की छायाप्रति भी स्वीकार्य होगी।

संगोष्ठी के लिए प्रस्तावित उप-विषय

1. वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय एकता की पृष्ठभूमि में भारतीय भाषाएँ
2. वैश्विक परिदृश्य में नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय भाषाएँ
3. वैश्विक परिदृश्य में भूमंडलीकरण और भारतीय भाषाएँ
4. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय साहित्य में कला के विविध रूप
5. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएँ एवं पत्रकारिता
6. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएँ और अनुवाद
7. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएँ और तकनीक
8. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाओं की दशा और दिशा
9. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय सिनेमा और विज्ञापन
10. वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ
11. वैश्विक परिदृश्य में समकालीन भारतीय साहित्य में विविध विमर्श
12. भारतीय भाषाओं के विकास में विभिन्न संस्थाओं का योगदान
13. भारतीय भाषाओं में रोजगार की संभावनाएं
14. पर्यावरण संरक्षण और भारतीय साहित्य
15. वैश्विक परिदृश्य में सोशल मीडिया और भारतीय भाषाएँ
16. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाओं के विस्तार में प्रवासी साहित्य का योगदान
17. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय पर्व एवं त्यौहार एकता के सूत्र
18. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय साहित्य में दर्शन
19. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषा और साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन
20. वैश्विक परिदृश्य में प्रयोजन मूलक हिंदी के बढ़ते कदम
21. वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाओं में आलोचना

(उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त प्रतिभागी मुख्य विषय को केन्द्र में रखते हुए अन्य उपविषयों का चयन कर सकते है।)

आप अपने आलेख mcc75hindiconference@gmail.com पर 7 फरवरी 2023 तक यूनिकोड (हिन्दी) में वर्ड फाइल (पीडीएफ भी संलग्न करें) में भेज सकते हैं। आलेख पीयर रिव्यूड जर्नल अथवा पुस्तक में प्रकाशित किए जायेंगे। आलेख 2000-3500 शब्दो में हो। संदर्भ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मानक प्रक्रिया के अनुरूप होने आवश्यक है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

डॉ. कोयल विश्वास : 9035042342

डॉ. वाणीश्री बुग्गी : 94821 24045

koyalbiswas@gmail.com

vanishribuggi77@gmail.com

mcc75hindiconference@gmail.com

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

भारतीय भाषा समिति

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

और

माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त, बेंगलुरू

(बेंगलुरू नगर विश्वविद्यालय)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

23-24 फरवरी, 2023

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय एकता

आयोजक

माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त, बेंगलुरू

(बेंगलुरू नगर विश्वविद्यालय)

निवेदक

डॉ सिस्टर अर्पणा
(प्राचार्या)

डॉ कोयल विश्वास
(समन्वयक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष)

डॉ. चन्दन श्रीवास्तव
(शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति)

डॉ सुमा सिंह
(कला संकाय प्रमुख)

माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त, बेंगलुरू
(बेंगलुरू नगर विश्वविद्यालय)

माउंट कार्मल कॉलेज की संस्थापिका –
मदर टेरेसा ऑफ सेंट रोज़ ऑफ लिमा

मदर टेरेसा का जन्म जनवरी 29, 1858 को चेन्नई में हुआ था| उनका वास्तविक नाम मेरी ग्रैस था| अल्पायु में मातृवियोग की पीड़ा पिता के स्नेह ने पूरा किया| केवल 18 साल की उम्र में केरल के ऐलेपी के एक स्कूल में उन्हें पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया जो कार्मेलाइट पादरियों द्वारा संचालित था|

उनके अथक परिश्रम ने इस जगह की कायापलट कर दी| 1884 को वह स्वयं कार्मेलाइट सिस्टर के रूप में दीक्षित हुई जिसके पश्चात उनका नाम मदर टेरेसा ऑफ सैंट रोज़ ऑफ लिमा पड़ा|

अप्रैल 27, सन् 1887 को केरल के एर्णाकुलुम में मदर ने कार्मेलाइट सिस्टर्स मंडली की स्थापना की| यहाँ से वह दैवी संकेत के अनुसार पीड़ित, गरीब एवं पददलितों की सेवा करने लगी और उनके लिए एक 'सौहार्दपूर्ण सभ्यता' का गठन किया| प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए भी उनकी संस्थान निरंतर सेवा धर्म निभाते रहे | अगले पंद्रह सालों के निष्काम सेवा भाव ने मदर टेरेसा के मनोबल को अधिक सशक्त कर दिया| मगर दीप्तिमान इस देवदूत का अंत बहुत निकट आ गया जब सितंबर 12, सन् 1902 के रेल दुर्घटना में उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई|

जिस सेवा धर्म का बीजारोपन मदर टेरेसा ने किया था ,संस्था की सिस्टर्स उन्हें और अधिक फैलाया और उसी लगन एवं परिश्रम के साथ उनके कर्तव्यों का निर्वहन भी किया|

वर्तमान में यह संस्थान वैश्विक स्तर पर 120 समुदायों के साथ मिलकर विद्यालय, महाविद्यालय, तकनीकी विद्यालय, समाज सेवा, अस्पताल, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, जेल तथा अन्य सार्वजनिक उपक्रमों के उत्थान एवं सामाजिक विकास के कार्यों में समर्पित है । |

भारतीय भाषा समिति
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है। इस समिति का लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में परिकल्पित भारतीय भाषाओं के समग्र और बहु अनुशासनात्मक विकास के मार्गों का पता लगाना और सिफारिश करना है। समिति को मौजूदा भाषा शिक्षण और अनुसंधान के पुनरुद्धार और देश के विभिन्न संस्थानों में इसके विस्तार से सम्बन्धित सभी मामलों पर मंत्रालय को सलाह देने का भी कार्य सौंपा गया है। सौंपे गए कार्यों को करने के लिए उच्चाधिकार प्राप्त समिति, उप-समितियों / अध्ययन समूहों को नियुक्त कर सकती है। समिति भारतीय भाषाओं के प्रचार का उद्देश्य आवश्यकता को उजागर करने के लिए संगोष्ठी,कार्यशालाओं, सम्मेलनों और वेबिनार आदि का आयोजन करता है। यह भाषाओं के शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार / संवर्धन से सम्बन्धित केन्द्र तथा राज्य सरकार की किसी संस्था के साथ बातचीत और समन्वय भी कर सकती है।

माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त, बेंगलुरू

माउंट कार्मल महिला महाविद्यालय सेंट टेरेसा की कार्मलाइट्स सिस्टर्स के संगठन द्वारा संचालित है। सन 1944 में कोचिन के त्रिशुर में स्थापित यह संस्था केवल कार्मल कॉलेज के नाम से जाना जाता था जो मद्रास विश्वविद्यालय से संबद्ध था। 1948 को इस संस्थान को बेंगलुरू में स्थानांतरित कर दिया गया और महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता तथा उत्तम कॉलेज की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए मैसूर विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया। सन 1964 में माउंट कार्मल कॉलेज को बेंगलुरू विश्वविद्यालय से संबंद्ध किया गया था और मार्च 2018 में बेंगलुरू विश्वविद्यालय के विभाजन के परिणामस्वरूप आज यह कॉलेज बेंगलुरू नगर विश्वविद्यालय से संबद्ध है।

सितम्बर 2005 से यह स्वायत्त कॉलेज के रूप में कार्यरत है| 2012 के बाद 2019 में राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा तीसरे चरण में भी 'A' ग्रेड की मान्यता दी गई है। यह महाविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 'उत्कृष्टता के संभावित संस्थान योजना' (CPE) के अंतर्गत चयनित भारत के कुछ महाविद्यालयों में से एक है।

माउंट कार्मल महाविद्यालय कला, विज्ञान, वाणिज्य और प्रबंधन में विभिन्न रोजगारोन्मुख और कौशल आधारित स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है। यह उच्च स्तरीय अनुसंधान सुविधाएँ, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ और कर्मचारी व विद्यार्थियों के बीच अनुसंधान संस्कृति की सुविधा प्रदान करता है। वर्ष 2011 में भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (DSIR) के साथ पंजीकृत किया गया है और इस विभाग द्वारा महाविद्यालय को वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान संगठन के रूप में मान्यता प्रदान किया गया है। वर्ष 2017 में भारत सरकार के जैव-प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा स्टार कॉलेज का दर्जा भी दिया गया है।

सन् 2021 माउंट कार्मल कॉलेज के साथ महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा का एक समझौते पर हस्ताक्षर हुआ जिसके अंतर्गत दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हिंदी में विद्यार्थी स्नातक एवं डिप्लोमा शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं|

आयोजन समिति

संरक्षक
डॉ. सिस्टर अर्पणा
(प्राचार्या)

श्री चमू कृष्ण शास्त्री
(अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति)

समन्वयक
डॉ. कोयल विश्वास
संयोजक एवं विभागाध्यक्ष,
माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त,बेंगलुरू

सह समन्वयक
डॉ. वाणीश्री बुग्गी
सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त,बेंगलुरू

सलाहकार
डॉ. सुमा सिंह
मानविकी संकाय प्रमुख,
माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त,बेंगलुरू

संयोजन समिति
डॉ. विकास कुमार पाठक, शैक्षिक सलाहकार,
(भारतीय भाषा समिति)
श्री कौशल कुमार पटेल, हिंदी विभाग
डॉ. प्रियंका, हिंदी विभाग
डॉ. अनुपमा पी ए, हिंदी विभाग
डॉ. राठोड़ पुण्डलिक, हिंदी विभाग